Sociology Hons.
B. A. Part 1
Paper 1

1st Paper

Ques: → Define culture and discuss the element of culture.

or, What is culture? Analyse the element of culture.

Ans: → संस्कृति समाजशास्त्र की क्षेत्र में विशेष महत्व रखती है और शुरू से ही समाज शास्त्रीयों ने संस्कृति का अध्ययन विशेष रूप से किया है। जहाँ तक संस्कृतिक अवधारणा का सम्बन्ध है। विचारों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में मतभेद पाया जाता है और दो ढंग से संस्कृतिक की व्याख्या की गई है। कुछ विचारकों ने सांस्कृतिक में केवल अभौतिक वस्तुएँ सम्मिलित किए हैं और कुछ विचारकों ने भौतिक तथा अभौतिक दोनों प्रकार की वस्तुएँ सांस्कृतिक का अंग स्वीकार किया है। पहले के मत को Sociological concept तथा दूसरे प्रकार के concept को Anthropological concept कहते हैं। Tylor, Redfield, Gillin, Kroeber, इत्यादि विचारकों ने समाजशास्त्री (Sociological) व्याख्या का समर्थन किया है। जबकि Pitrington, Bidney तथा Ogburn आदियों ने Anthropological concept की अवधारणा दी।

सब से पहले नियमित रूप से संस्कृत की अवधारणा देते हुए Tylor ने यह व्याख्या दी की "Culture is the complex whole which includes knowledge, Belief, art, moral, law, custom, and other capabilities aquired by man as a member of society" उक्त परिभाषा से यह स्पष्ट है कि मानव समाज और समूह में रहकर योग्यताएँ प्राप्त करता है वह संस्कृति में सम्मिलित होती है। यह भी स्पष्ट है कि यह सभी योग्यताएँ अभौतिक होती हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि Tylor ने समाज शास्त्रीय अवधारणा का समर्थन किया है। इस प्रकार Redfield ने यह विचार दिया है कि "Culture is a body of beliefs and convention understanding manifest in art and artifact, which persisting through tradition characterises a human group" इस परिभाषा से भी

अभौतिक वस्तुओं

स्पष्ट होता है कि Redfield ने भी केवल, अर्थात्
को भी सम्मिलित किया कि विश्वास हो या convention under standing दोनों ही अभौतिक होती हैं। इस प्रकार Gillin को यह विचार किया कि Culture is not activity but the Patterning of activity या Clyde Clauck kohn का यह विचार किया कि "Culture is the same Total ways of behaviour" इस बातों को स्पष्ट करता है कि व्यवहार की ढंग और तरीके संस्कृति को स्पष्ट करते हैं। व्यवहार के यह ढंग और तरीके Subjective होते हैं।

दूसरी ओर Pidington ने मानवशास्त्री अवधारणा का समर्थन करते हुए भौतिक और अभौतिक वस्तुओं को संस्कृति में सम्मिलित की। उसके अनुसार the Culture of a people may be define as the sum total of the material and intellectual equipment where by the satisfy their Biological and Social needs and adapt themselves to their environment.
इस परिभाषा के अनुसार भौतिक तथा अभौतिक दोनों ही प्रकार की वस्तुएं संस्कृति में सम्मिलित हैं और यह भी स्पष्ट है कि यह सभी वस्तुएँ चाहे भौतिक वस्तु के रूप में हो चाहे मानसिक प्रक्रिया के रूप में। मानव के द्वारा बनाए जाते हैं। इस प्रकार Bidney ने यह विचार दिया कि संस्कृति में Agrifact, artifact, Socifact तथा Mentifact सम्मिलित होते हैं। Agrifact कृषि उत्पादन तथा Artifact उद्योगी उत्पादन भौतिक होते हैं। जबकि Social fact (Product of Society) तथा mentifact (Product of mined) अभौतिक होते हैं।

ऊपर की व्याख्याओं से यह स्पष्ट है कि चाहे संस्कृती की समाजशास्त्रीय अवधारणा हो या मानवशास्त्रीय अवधारणा हो प्रत्येक परिभाषा में संस्कृती को एक Complex whole बताया गया है और अनेक इकाइयों को इसमें शामील किया गया है इस प्रकार संस्कृती की अनेक

Scanned with CamScanner

अंशों की चर्चा की गई। कुछ विचारकों ने केवल अभौतिक अंशों का विवरण किया है जब कि कुछ विचारकों ने भौतिक तथा अभौतिक दोनों ही प्रकार के अंशों की चर्चा की है Anderson तथा Parker के अनुसार "All Society have a Culture, That is a Pattern while consisting of the material and non-material substance that give them desires for opretive." इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि अनेक प्रकार की भौतिक और अभौतिक इकाई संस्कृती का अंश होती है और इन्ही अंशों के आधार पर elements of culture, Culture complex तथा Culture Patterns की चर्चा की गई।

Anderson तथा Parker ने ही Culture traits तथा Culture elements की चर्चा करते हुए यह विचार किया कि "Culture traits are the single elements or smallest units of a Culture System we recognised for purposes of analysis." इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि संस्कृती में जो सबसे छोटी इकाइयां होती है उन्हे ही संस्कृती का तत्व कहा जाता है और उन्हे ही Culture traits कहा जाता है यह element या तत्व या तो वस्तु के रूप में हो सकते है या व्यवहार के रूप में, अनेक प्रकार के व्यवहार और अनेक प्रकार की वस्तुएं जो Complex whole में सम्मीलित होती है और संस्कृती की इकाई बनती है उन्हे elements of culture कहा जाता है इन्ही element या Traits के मिलने से संस्कृती का complex whole बनता है

Jacobe तथा Stern ने इस सम्बन्ध में विचार देते हुए यह व्याख्या दी है कि "Culture elements or traits may be defined of those invented and transmited units of culture which for particular purpose of discription and

theoritical treatment need not be subjected to further subdivision." इस प्रकार परिभाषा से यह स्पष्ट है कि culture के elements संस्कृती के वह इकाईयां होती है जिनका समाज ही अविष्कार होता है या जो समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक learning Process के द्वारा आती है यही इकाईयां Traits of culture भी कहलाती है इसके साथ-2 यह भी स्पष्ट है कि संस्कृती के यह तत्व ऐसी इकाईयां होते हैं जिन्हें आगे विभाजित करने की कोई आवश्यकता नही होती। जिस प्रकार किसी पदार्थ की सबसे छोटी इकाई जो उसके गुणों को स्पष्ट करती है उसी प्रकार संस्कृती की वह छोटी इकाई जो वास्तव में पाई जाती है और जिसका Transmission होता है element of culture कहलाती है। इस बात का समर्थन करते हुए Hobel ने यह विचार दिया कि "A culture element is a pattern of behaviour or the material Product of such behaviour that may be treated as the smallest unit its order."

इस व्यवस्था के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संस्कृती की वह सबसे छोटी इकाई जो मानव व्यवहार के रूप में पाई जाती है। Element of culture कहलाती है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि जैसे एक दीवार की सबसे छोटी इकाई ईंट होती है। और ईंट के मिलने से दिवार बनती है। इस प्रकार संस्कृती के तत्व भी इसके इकाई होते है और इन्ही के मिलने से Culture order बनता है।

Hobel की व्याख्या से यह भी स्पष्ट होता है कि Element of culture में मानव व्यवहारों के ढंग और व्यवहार के Product दोनों ही सम्मीलित होते है अर्थात व्यवहार स्वयं Element of culture नही होता बल्कि ~~behavior~~ behaviour of pattern को Element of culture कहा जा सकता है

अर्थात किसी समाज में Folkways पाये जाते हैं वे behaviour Pattern को स्पष्ट करते हैं इसलिए इन रीतियों को संस्कृति की इकाई कहा जा सकता है इसी प्रकार किसी समाज में प्रार्थना के ढंग, विवाह के ढंग एवं उनको निमंत्रित करने का Pattern आदि Element of culture को स्पष्ट करते तो दूसरी ओर मानव व्यवहार के Product भी संस्कृति के तत्व में शामिल है अर्थात जो भौतिक वस्तुएं मानव निर्मित होती हैं वह भी संस्कृति का अंश कहलाती है Example के लिए परम्परा पर आधारित भारतीय समाज में बैलगाड़ी एक element of culture थी इसी प्रकार आधुनिक समाज में Refrigter तथा T.V को Element of culture कहा जाता है सकता है

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि भौतिक और अभौतिक दोनों ही प्रकार की इकाइयाँ Element of culture हो सकती हैं।

The end

Scanned with CamScanner

सामाजिक स्तरीकरण के विभिन्न आधार

बॉटोमोर ने सामाजिक स्तरीकरण के चार स्वरूपों की चर्चा की है —

STRATIFICATION
PART-I, PAPER-II

(a) दास प्रथा (SLAVERY)
(b) जागीरें (ESTATES)
(c) जाति व्यवस्था (CASTE SYSTEM) और
(d) वर्ग व्यवस्था (CLASS SYSTEM)

(a) दास प्रथा (SLAVERY) मानव इतिहास में दास प्रथा एक महत्वपूर्ण सामाजिक व्यवस्था रही है। दास वह व्यक्ति होता है जिसे कानून और परम्परा दोनों ही दृष्टि से दूसरे की सम्पत्ति माना जाता है। कुछ विशेष परिस्थिति में वह पूर्णतः अधिकार विहीन होता है तथा कुछ परिस्थिति में उसकी रक्षा उसी प्रकार की जाती है जिस प्रकार किसी जानवर की। इस प्रकार दास प्रथा असमानता की उत्कृष्ट अवस्था का सूचक है। यूँ तो दास प्रथा के उदाहरण इतिहास में समय-समय पर मिलते रहे हैं पर विशेष रूप से यूनानी एवं रोमन साम्राज्यों में इसका अधिक प्रचलन रहा है। इसके अलावे 17वीं एवं 18वीं शताब्दी में संयुक्त राज्य अमेरिका में दास प्रथा का प्रचलन रहा है। दास प्रथा में समाज में दो ही वर्ग थे - एक मालिक और दूसरा दास। मालिक वह था जिसके पास अनेक दास होते थे और दासों के श्रम पर वह जिन्दा रहता था। इस तरह दास मालिक की सम्पत्ति था जिसे मालिक अपनी इच्छानुसार खरीद, बेच सकता था तथा जान से मारकर नष्ट कर सकता था। दूसरी तरफ दास निसहाय था, यहाँ तक कि उसका शरीर भी अपना नहीं था क्योंकि वह भी मालिक की इच्छा पर अस्तित्व में था। दास के पास अपने श्रम के अलावा कुछ भी नहीं था। आज के प्रजातांत्रिक युग में दास प्रथा का पूरी तरह से नामोनिशान मिट गया है, अतः यह अब स्तरीकरण का आधार नहीं रहा।

(b) जागीर (Estate) जागीर प्रथा थी जो कानून तथा प्रथा के द्वारा मान्य थी। मध्य युग में यूरोप में इसमें तीन वर्ग होते थे - (a) पादरी (b) सरदार (c) साधारण जनता। ये तीनों जागीरों के सदस्य एक सामाजिक वर्ग की तरह विशेष जीवन शैली जीते थे तथा समाज में ऊँच नीच के

आधार पर इनके पद व्यवस्थित थे। चूँकि राज्य चर्च के अधीन था अतः पादरियों का स्थान समाज में सबसे ऊँचा था। Johnson जागीरों को वर्गों से दो आधारों पर अलग करते हैं। एक तो यह कि तीनों पद सोपानात्मक क्रम में नहीं थे क्योंकि पादरी नियमानुसार प्रथम वर्ग में थे परन्तु उन्हें कोई उपाधि प्राप्त नहीं थी, अतः व्यावसायिक रूप से वे सरदारों से, जो राजवंश के थे, नीचे थे और जिन पादरियों को उपाधि हासिल थी वे सरदारों से अन्तःक्रिया नहीं कर पाते थे। जागीरों को वर्ग से अलग करने का दूसरा आधार Johnson के अनुसार यह था कि पादरी लोग अविवाहित थे, अतः उनके परिवार नहीं थे। परिवार नहीं होने से सामाजिक स्तरीकरण में उनकी पदस्थिति स्पष्ट नहीं थी। बॉटोमोर ने जागीरों की तीन विशेषताओं की चर्चा की है -

(a) हर जागीर की एक परिभाषित परिस्थिति थी।

(b) जागीरों में स्पष्टतः श्रम विभाजन था और

(c) जागीरें राजनैतिक समूह थी।

मध्यकाल में भारतवर्ष में भी मुगलों के आगमन के साथ जागीरदारी प्रथा की शुरुआत हुई होगी अंग्रेजों के आगमन के साथ ही धीरे-धीरे जागीरदारी प्रथा समाप्त होने लगी और आज स्वतंत्र भारत में इसका नामोनिशान नहीं है।

(3) जाति व्यवस्था

जाति व्यवस्था भारतीय समाज की एक ऐसी संस्था है जिसे समझे बिना हिन्दू सामाजिक व्यवस्था को नहीं समझा जा सकता है। दरअसल जाति भारतीय सामाजिक संरचना की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है पर एम० एन० श्रीनिवास का कहना है कि इसका प्रयोग दो अर्थों में किया गया है एक, वर्ण के अर्थ में जो परम्परागत ढंग से हिन्दू समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र और पाँचवा अछूत जो कि इन श्रेणियों में शामिल नहीं है फिर भी सामाजिक क्रियाकर्मकाण्डीय संस्करण में सबसे नीचे है, बाँटती है और जाति का दूसरा अर्थ ~~प्रयोग जाति के अर्थ में किया गया है जिसका~~ ~~संबंध~~ अंतर्विवाही समूहों से है जो न केवल हिन्दुओं बल्कि ~~का~~ भारतीय मुसलमानों, सिखों, ईसाइयों आदि में भी पाये जाते हैं। योगेन्द्र सिंह ने भी इस बात का उल्लेख किया है कि जाति व्यवस्था ... [illegible]